खण्ड–5, अंक–1, वर्ष–2017, मु0पृ0 24–27, D.O.I. : 10.22445/avsp.v5i01.9842 शोध पत्र

परमार अभिलेखों में वर्णित सूर्योपासना

राजीव नयन शुक्ल
कनिष्ठ शोध अध्येता, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–226007, उ0प्र0, भारत
rajivnayan.shukla.55@gmail.com

प्राप्त तिथि–14.06.2017, स्वीकृत तिथि–10.08.2017

सार– परमार अभिलेखों में सूर्य महिमा तथा तत्कालीन समय में सूर्य पूजा का महत्व उद्धृत है। प्राचीन भारत में सूर्योपासना भिन्न–भिन्न रूपों में होती थी। परमार काल में सूर्य पूजा का अभिज्ञान परमार अभिलेखों से होता है। परमार साम्राज्य में भिलसा भगवान् सूर्य की उपासना का एक प्रसिद्ध स्थल था। परमार अभिलेखों में सूर्य के विविध नाम भैल्लस्वामिन्, सूर्य, भानु, विक्रान्त, निम्बादित्य, जगतस्वामिन्, बालाकदेव आदि वर्णित है।

बीज शब्द– भगवान् भास्कर, *ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद,* मग, गुप्तकाल, तन्नुवाय श्रेणी, नागपुर प्रशस्ति, हर्सोद अभिलेख, जैनाड अभिलेख, वर्मान् अभिलेख, भीनमाल अभिलेख, भानु मन्दिर।

The Worship of Sun God as described in the Paramara inscriptions

Rajiv Nayan Shukla
Junior Research Fellw, ICHR
Department of Ancient Indian History and Archaeology
University of Lucknow, Lucknow-226007, U.P., India
rajivnayan.shukla.55@gmail.com

Abstract- Importance of Sun and Sun worship in contemporary period is available from contemplation of Paramara Inscriptions. The Sun was worshipped in different forms in ancient India. Inscriptions throw light on sun worship in the time of the Paramaras in the areas ruled by him. Bhilsa was one of the most famous seats of the Sun God. The different name of the sun-god, like Bhaillasvamin, Surya, Bhanu, Vikranta, Nimbaditya, Jagata-Svamin and Balakdeva are mentioned in the Paramara Inscriptions.

Key words- Bhagavan Bhaskar, *Rigveda*, *Yajurveda, Atharvaveda*, Maga, Gupta-Period, The guild of silk weavers, Paramara, Nagpur Museum stone Inscription, Harsauda stone inscription, Jainad stone Inscription, Varman stone Inscription, Bhinmal stone Inscription, Bhanu temple.

1. **प्रस्तावना–** भारतीय संस्कृति की सनातन परम्परा में भगवान् भास्कर का स्थान अप्रतिम है। भिन्न–भिन्न नामों से सूर्य की उपासना प्राचीन काल से अर्वाचीन समय तक भिन्न–भिन्न रूपों में होती रही है। सूर्य शब्द की व्युत्पत्ति है 'सुवति प्रेरियति कर्मणि लोकम्' अर्थात् जो समस्त लोक को कर्म में संलग्न करे वह सूर्य है।[1] ऋग्वेद[2] में सम्पूर्ण संसार के गतिमानों में सूर्य को प्रमुख बताया गया है। उस संहिता में सूर्यदेव को चौदह सूक्त समर्पित है, जिनमें से ग्यारह पूर्णतः सूर्य की उपवर्णना, स्तुति या महत्त्व प्रतिपादक हैं। इन सूक्तों से प्रायः सूर्य शब्द से भौतिक सौर मण्डल का बोध होता है। आकाश में सूर्यदेव का ज्वलन्त प्रकाश मानों अमूर्त अग्निदेव का मुख है।[3] मृतक के चक्षु (नेत्र) उसमें विलीन होते हैं।[4] यह सूर्यदेव दूरद्रष्टा[5], सर्वद्रष्टा[6] और अशेष जगती के सर्वेक्षक है।[7] सूर्य की किरणों में मनुष्य के लिए उपयोगी समस्त तत्त्व विद्यमान हैं, समस्त रोगों और दूरितों को दूर करने की शक्ति है। उदित होते हुए सूर्य का नियमित सेवन हृदय और मस्तिष्क के समस्त विकारों को नष्ट करने की सामर्थ्य रखता है। सूर्य की उपासना से रोगों से बचाव एवं आयुवृद्धि होती है।[8] स्वस्थ जीवन के लिए सूर्य की सहायता पूर्णरूपेण अपेक्षित है। इसकी आवश्यकता और महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए ऋषियों और आचार्यों ने सूर्य–प्रणाम एवम् सूर्योपासना का विधान किया था। रोग निवृत्ति ही नहीं अपितु दीर्घायु प्राप्ति के लिए भी प्रातःकाल सूर्योदय के समय उनके रक्त वर्ण वाले प्रकाश का सेवन करना चाहिए।

2. **वेद आधारित अध्ययन–** यजुर्वेद[9] में सूर्य स्वयम्भू स्वरूप में वर्णित है। अथर्ववेद[10] में सूर्य को चक्षुओं का पति बताया गया है और उनसे अपनी रक्षा की कामना की गई है। अथर्ववेद[11] में सूर्य के अनुसार सूर्य प्राणियों के एक नेत्र है, जो आकाश, पृथ्वी और जल पर अत्यन्त निपुणता से दृष्टिपात करते हैं। *शतपथ ब्राह्मण*[12] में सूर्य को त्रयीमय रूप में वर्णित किया गया है। तैत्तिरीय आरण्यक[13] में सूर्यदेव को समस्त जगत् में प्राणों का संचार करने वाला बताया गया है। रामायण[14] के युद्ध काण्ड में आदित्य हृदय स्तोत्र द्वारा भगवान् सूर्य की वन्दना की गई है। उसमें वर्णित है कि यह

भगवान् सूर्य ब्रह्मा, विष्णु, शिव, स्कन्द और प्रजापति है। महेन्द्र, वरुण, काल, यम, सोम आदि भी यह है। कुषाण सम्राट् स्वयं सूर्योपासक थे। कनिष्क के पूर्वज भगवान् शिव के उपासक थे।[15]

3. **ऐतिहासिक एवं अभिलेखीय अध्ययन–** अभिलेखीय एवम् साहित्यिक साक्ष्यों में मगों को सौर सम्प्रदाय से सम्बन्धित बताया गया है।[16] गोविन्दपुर(गया जिला) अभिलेख(1137 ईसवी) के अनुसार मग भारत में साम्ब द्वारा आमंत्रित किये गये।[17] अल्बरूनी[18] ने भारत में मग पुजारियों को उपस्थित बताया है। गुप्तकाल में सूर्योपासना प्रचलित होने के प्रमाण गुप्त शासकों के अभिलेखों से प्राप्त होते हैं। प्रथम कुमारगुप्त के मन्दसौर अभिलेख[19] में भगवान् सूर्य की स्तुति ललित काव्यमय भाषा में की गई है। इस अभिलेख के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रथम कुमारगुप्त के प्रांतपति बन्धुवर्मा के शासनकाल में तन्तुवाय श्रेणी द्वारा सूर्य मन्दिर का संस्कार हुआ था। स्कन्दगुप्त के इन्दौर ताम्रपत्र लेख[20] में भगवान सूर्य की प्रार्थना सुन्दर शब्दों से आरम्भ की गई है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि सूर्य की आराधना केवल शारारिक लाभ के लिए न करके अपितु मानसिक शांति के लिए भी की जाती थी। मिहिरकुल की ग्वालियर प्रशस्ति[21] में सूर्य मन्दिर का निर्माण भानु के नाम से किये जाने का वर्णन प्राप्त होता है। पूर्व मध्यकाल में उत्तर भारत(राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश) तथा बिहार एवं बंगाल में सूर्य पूजा का प्रचलन था। थानेश्वर के शासक प्रथम राज्यवर्द्धन, आदित्यवर्द्धन तथा महाराज प्रभाकरवर्द्धन, सूर्य भक्त होने के कारण परम आदित्य भक्त कहे गए हैं।[22]

यद्यपि परमार शासक शैव धर्मानुयायी थे तथापि वह अन्य समस्त देवताओं के प्रति श्रद्धाभाव रखते थे, जिसका अभिज्ञान नरवर्मन्[23] की नागपुर प्रशस्ति एवम् देवपाल के हर्सोद अभिलेख[24] से होता है। परमार साम्राज्य में भिलसा भगवान् सूर्य की उपासना का एक प्रसिद्ध स्थल था, जहाँ पर भैल्लस्वामिन् का एक प्रसिद्ध मन्दिर था। परमार शासकों के अभिलेखों से तत्कालीन समय में सूर्योपासना के प्रचलित होने पर विशद् प्रकाश पड़ता है। भिलसा से प्राप्त एक अभिलेख[25] सूर्य की प्रशंसा को समर्पित है। यह प्रशस्ति परमार शासक भोजदेव के दरबारी कवि चित्तप द्वारा रचित है। इस अभिलेख में सुन्दर काव्यात्मक ढंग से सूर्य की किरणों को शेषनाग के फण पर विराजमान मुक्तामणि, समुद्र में मोती एवम् आकाश में तारों के समान बताया गया है।[26] इसके अतिरिक्त यह विवरण भी प्राप्त होता है कि सूर्य की किरणें जब चन्द्रमा के सम्पर्क में आती है, क्षितिज और बादलों के सम्पर्क से क्रमशः चाँदनी रात, सूर्यास्त और इन्द्रधनुष का निर्माण होता है।[27] जगद्देव का जैनाड अभिलेख[28] भगवान् सूर्य के अभिवादन से प्रारम्भ होता है। इस अभिलेख में अर्जुन की रानी पद्मावती द्वारा निम्वादित्य के नाम से एक सूर्य मन्दिर का निर्माण करवाने का उल्लेख प्राप्त होता है।[29] यहाँ पर महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि निम्बादित्य सूर्य का स्थानीय नाम प्रतीत होता है। पूर्णपाल का वर्मान् अभिलेख[30] सूर्योपासना पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालता है। इस अभिलेख में सारम के पुत्र णोचक द्वारा आरोग्य हेतु मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाना अभिलिखित है।[31] पूर्णपाल के वसन्तगढ़ अभिलेख[32] में अभिलिखित है कि अपने पति विग्रहराज की आकस्मिक मृत्यु पर पूर्णपाल की बहिन लाहिणी सरस्वती के तट पर स्थित वट नगर या वटपुर में आकर अपने भाई के संरक्षण में रहने लगी और उसने उस स्थल के एक प्राचीन भानु–मन्दिर का पुनर्निर्माण तथा एक कूप का उत्खनन अपनी आध्यात्मिक उन्नति हेतु करवाया।[33]

कृष्णराज का भीनमाल अभिलेख[34] सूर्य की वन्दना से प्रारम्भ होता है। इस अभिलेख में जगत्स्वामिन्(सूर्य) के मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाये जाने का उल्लेख प्राप्त होता है। अभिलेख से ज्ञात होता है कि धर्कुट वंश के जेल के पुत्र किरिणादित्य और माधव के पुत्र देदहरि, धरणचन्द्र के पुत्र धन्धनाक तथा थारवाट के सर्वदेव के पुत्र धरणादित्य नामक महानुभावों ने इस कार्य को पूर्ण किया।[35] जीर्णोद्धार कार्य सम्पूर्ण हो जाने पर जेजाक नामक ब्राह्मण ने अपने व्यय पर स्वर्ण कलश बनवा कर मन्दिर पर स्थापित किया।[36] इसके अतिरिक्त यह विवरण प्राप्त होता है कि श्री पुरीय मण्डल का कश्चित् ग्राम इस मन्दिर को प्रतिवर्ष 20 द्रम्म देगा। जयतसीह का भीनमाल अभिलेख[37] जगत्स्वामिन् के मन्दिर के एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि महाराजपुत्र जयत्सीह के विजयी शासनकाल में श्रीमाल में परमहिदा के पुत्र अरवासक गुहिल ने बालाकदेव(सूर्य) को नगद एक द्रम्म दिया तथा उसकी पत्नी ने भी उस देवता के प्रति एक द्रम्म का दान दिया।[38] अभिलेखीय साक्ष्यों के अतिरिक्त कलात्मक साक्ष्यों से भी परमार काल में सूर्योपासना के प्रमाण प्राप्त है। वर्मान् में सूर्य नारायण से सम्बन्धित एक मन्दिर प्राप्त है।[39] इस मन्दिर में सूर्य की प्रतिमा खड़ी अवस्था में स्थित है, जो घुटनों से नीचे पूर्णतया खण्डित है।[40]

4. **निष्कर्ष–** उपर्युक्त विवरण से अभिहित होता है कि परमार शासक सूर्य की उपासना करते थे। परमार अभिलेख सौर सम्प्रदाय के सामाजिक प्रभाव पर भी प्रकाश डालते हैं। परमार अभिलेखों से ज्ञात होता है कि शासक वर्ग के अतिरिक्त स्थानीय व्यक्ति स्वयं सूर्योपासना करते थे। इसके अतिरिक्त वह सूर्य मन्दिरों के निर्माण, पुनर्निर्माण आदि कार्यों में योगदान करते थे। परमार अभिलेखों से भगवान् सूर्य के विविध नाम भैल्लस्वामिन्, सूर्य, भानु, विक्रान्त, निम्बादित्य, जगतस्वामिन्, बालाकदेव आदि प्रारु होते हैं। यह विविध नाम इस काल में सूर्योपासना के प्रसिद्ध होने एवम् सूर्य देवता के महत्त्व पर प्रर्याप्त प्रकाश डालते हैं। अभिलेखों के अध्ययन से इस काल में सूर्योपासना के भौगोलिक विस्तार पर विशद प्रकाश पड़ता है।

सन्दर्भ

1. विनायक, अनुराधा(2016) सूर्य–प्रतिमायें, अनुसंधान, विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड 4, अंक 1, पृ0 107।
2. शर्मा, जयदेव(1935)(भाष्यकार) ऋग्वेद, 9.114.3, षष्ठ खण्ड, अजमेर, आर्य साहित्य लिमिटेड, पृ0 426ः सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः । देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्दो परिवस्रव ।।
3. शर्मा, जयदेव(1935)(भाष्यकार) ऋग्वेद, 10.7.3, षष्ठ खण्ड, उपरिवित्, पृ0 451ः अग्नेरनीकं वृहतः सपंर्य दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य ।
4. विश्वबन्धु(1965)(सं0) ऋग्वेद, 10.158.4, भाग 7, होशियारपुर, वैदिक शोध संस्थान, 3858ः चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः । सं चेदि वि पश्येम ।।
5. शर्मा, जयदेव(1934)(भाष्यकार) ऋग्वेद, 7.35.8, चतुर्थ खण्ड, अजमेर, आर्य साहित्य लिमिटेड, पृ0 716ः शं न सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतः प्रदिशो भवन्तु । शं नः पर्वता धुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वाप ।।
6. विश्वबन्धु(1965)(सं0) ऋग्वेद, 1.50.2, होशियारपुर, वैदिक शोध संस्थान, पृ0 377ः सूराय विश्वचक्षुसे ।
7. विश्वबन्धु(1963)(सं0) ऋग्वेद, 4.13.3, होशियारपुर, वैदिक शोध संस्थान, पृ0 1514ः तं सूर्य हरितः सप्त यह्वी स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति ।
8. शर्मा, जयदेव(1931)(भाष्यकार) यजुर्वेद, 36.24, द्वितीय खण्ड, अजमेर, आर्य साहित्य लिमिटेड, पृ0 670ः तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।
9. शर्मा, जयदेव(1930)(भाष्यकार) यजुर्वेद, 2.26, प्रथम खण्ड, अजमेर, दि डायमण्ड जुबिली प्रेस, पृ0 54ः स्वयंभूरसि श्रेष्ठों रश्मिर्वर्वोदा असि वर्चो में देहि । सूर्यस्यावृत मान्वावर्ते ।
10. शर्मा, श्री राम(2005)(सं0) अथर्ववेद, 5.24.9, भाग 1, मथुरा, युग निर्माण योजना, पृ0 38ः सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः स मावतु।
11. शर्मा, श्रीराम(2005)(सं0) अथर्ववेद, 13.1.45, भाग 2, मथुरा, युग निर्माण योजना, पृ0 7ः सूर्यो द्यां सूर्यः पृथिवीं सूर्य आपोऽतिपश्यति । सूर्यो भूतस्यैकं चक्षुरा रुरोह दिवं महीम् ।
12. मैक्समूलर, एफ0(1897) (सं0) सेक्रेड बुक ऑफ् दि ईस्ट, भाग 43, लंदन, क्लेरिडन प्रेस, पृ0 366।
13. शास्त्री, महादेव एण्ड रंगाचार्य, के0(1900)(सं0) तैत्तिरीय आरण्यक, 2.3.2, मैसूर, गवर्नमेण्ट ब्राँच प्रेस, पृ0 195ः येन त्रितो अर्णवान्निर्बभूव येन सूर्य तमसो निर्मुमोच । येनन्द्रो विश्वा अजहादरातीस्तेनाहं ज्योतिषा ज्योतिरानशान आक्षि ।
14. परब, काशीनाथ पाण्डुरंग(1902)(सं0)रामायण, 6.105, बाम्बे, निर्णय सागर प्रेस, पृ0 918 : एष ब्रह्म च विष्णुश्च शिवस्कन्दः प्रजापतिः। महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यापां पतिः।
15. मुकर्जी, राधाकुमुद(1962) प्राचीन भारत, प्रथम संस्करण, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ0 85।
16. भण्डारकर, आर0 जी0(1928), वैष्णिविज्म, शैविज्म एण्ड माइनर रिलीजिएस सिस्टम्स, पूना, भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीटयूट, मु0पृ0 153–154।
17. वही।
18. सचाउ, एडवर्ड0 सी0(1910) अल्बरूनीज इण्डिया, केगनपॉल ट्रेंच ट्रूबनर एण्ड कम्पनी, लंदन, पृ0 21।
19. फ्लीट, जॉन फैथफुल(1888) कार्पस इन्सिकृप्शनम् इण्डिकेरम्, जिल्द 3, (इंस्क्रिप्शन ऑफ् दि अर्ली गुप्त किंग्स एण्ड देयर सक्सेसर), कलकत्ता, पृष्ठ संख्या 79–88।
20. वही, पृ0 70।
21. वही, मु0पृ0 161–64।
22. ब्यूहलर, जॉर्ज(1983) दि मधुबन कॉपर प्लेट ऑफ् हर्ष, एपिग्राफिया इण्डिका, जिल्द 1 (1892), नई दिल्ली, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ् इण्डिया, मु0पृ0 72–73।
23. त्रिवेदी, हरिहर विट्ठल(1991) कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम, भाग–7, खण्ड 2, नई दिल्ली, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ् इण्डिया, मु0पृ0 106–114।
24. वही, मु0पृ0 171–175।
25. वही, मु0पृ0 122–126।
26. वही, पृ0 125, श्लोक 8ः फणामणिषु शेषस्य मुक्तामणिषु तोयधेः । तारामणिषु च व्योम्नस्तव रोचिर्विवरोचते ।
27. सरकार, दिनेश चन्द्र(1987), टू इंस्क्रिप्शन फ्राम भिलसा, एपिग्राफिया इण्डिका, जिल्द 33, नई दिल्ली, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ् इण्डिया, श्लोक संख्या 8–9, पृ0 219।
28. गांगुली, धीरेन्द्र चन्द्र(1938) जैनाड स्टोन इंस्क्रिप्शन ऑफ् द परमार जगद्देव, एपिग्राफिया इण्डिका, जिल्द 22 (1933–1934), दिल्ली, मैनेजर ऑफ् पब्लिकेशन, पृ0 54।
29. त्रिवेदी, हरिहर विट्ठल(1991) कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम, भाग–7 खण्ड 2, उपरिवित्, पृ0 94।
30. सुकंठनकर, वी0 एस0(1918) प्रोगेस रिपोर्ट ऑफ् दि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ् इण्डिया, वेस्टर्न सर्किल, वर्ष–1917, पृ0 72।
31. त्रिवेदी, हरिहर विट्ठल(1991) कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम, भाग–7 खण्ड 2, उपरिवित्, पृ0 226।
32. बर्ट, टी0 एस0(1841) इंस्क्रिप्शंस टेकन फ्रॉम ए बावली एट बसंतगढ़ एट द फुट ऑफ् द साउर्थन रेंज ऑफ् हिल्स रनिंग पेरल्ल टू माउण्ट आबू, जनरल ऑफ् रायल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ् बंगाल, खण्ड 10, भाग 2, कलकत्ता, बिशप कॉलेज प्रेस, पृ0 664; प्रोगेस रिपोर्ट आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ् इण्डिया(1905–1906) वेस्टर्न सर्किल, बाम्बे,

गर्वनमेण्ट जनरल डिर्पाटमेण्ट, पृ0 50; कीलहार्न,ए0फ0(1981) वसंतगढ़ इंस्क्रिप्शंन ऑफ् पूर्णपाल, एपिग्राफिया इण्डिका, जिल्द 9 (1907–1908), (नई दिल्ली, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ् इण्डिया, 1981), पृ0 10।
33. त्रिवेदी, हरिहर विट्ठल(1991) कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम, भाग–7 खण्ड 2, उपरिवित्, श्लोक संख्या 27–31, मु0पृ0 231–232।
34. त्रिवेदी, हरिहर विट्ठल(1991) कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम, भाग–7 खण्ड 2, उपरिवित्, पृ0 320।
35. वही, पृ0 322।
36. वही, मु0पृ0 322–323।
37. जैक्सन, ए0 एम0(1896) गजेटियर ऑफ बॉम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग–1, खण्ड–1, बॉम्बे गवर्नमेंट प्रेस, पृ0 474।
38. त्रिवेदी, हरिहर विट्ठल(1991) कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डिकेरम, भाग–7, खण्ड–2, उपरिवित्, पृ0 330।
39. सुकंठनकर, वी0 एस0(1918) प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ दि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ् इण्डिया, वेस्टर्न सर्किल(1917), पृ0 72।
40. वही।